तत्पुरुष - समास Contd.

B.A. I SEM. 30.04.2020

945. उपमानानि सामान्यवचनैः - 2/1/55

यह विधि सूत्र है। सूत्र का अर्थ है उपमान वाचक सुबन्त का समान-धर्मी उपमेय के साथ तत्पुरुष समास होता है। उपमान-साधन को कहते हैं और उपमेय साध्य है। उपमान और उपमेय में जो समानता एक सी है, उसे साधारण धर्म का 'सामान्य' कहते हैं। यथा। अ० वि० - घनश्यामः - लौ० वि० घन इव श्यामः, घन + सु श्याम + सु। इसमें घन उपमान है और श्याम साधारण धर्म या सामान्य।

'उपमानानि सामान्यवचनैः' सूत्रानुसार उपमानवाची 'घन' सुबन्त का सामान्य पद साम 'श्याम' के साथ समास हुआ। 'कृत्तद्धित०' - से प्राति० संज्ञा, 'सुपो धातु०' - से विभक्ति का लोप, 'प्रथमा०' से उपसर्जन संज्ञा, 'उपसर्जनं पूर्वम्' - से पूर्वनिपात, 'एकदेशविकृतमन्यवत्' से पुनः प्राति० संज्ञा, स्वादि कार्य होकर 'घनश्यामः' रूप सिद्ध हुआ।

वा० - शाकपार्थिवादीनां सिद्धये उत्तरपदलोपस्योपसंख्यानम् - शाकपार्थिव आदि शब्दों का समास होने पर उत्तरवर्ती पद का लोप हो जाता है। शाकपार्थिवादि गण हैं जिसमें कृतापकृत, मुक्तविमुक्त, पीतविपीत तथा गतप्रत्यागत आदि शब्द आते हैं।

(a) यथा - शाकपार्थिवः (शाक को प्यार करने वाला राजा), शाक-प्रियः पार्थिवः (लौ० वि०), अ० वि० शाकप्रिय + सु, पार्थिव + सु। इसमें 'शाकपार्थिवादीनां...' वार्तिक से उत्तरवर्ती 'प्रिय' पद का लोप होकर 'शाकप्रियः' रूप बना। शेष - घनश्यामः के समान।

(b) देवब्राह्मणः - लौ० वि० - देवपूजको ब्राह्मणः, अ० वि० - देवपूजक + सु, ब्राह्मण + सु।

946 - नञ् - 2/2/6 - 'नञ्' (न) के साथ सुबन्त पद का समास होता है और यह नञ् तत्पुरुष समास कहलाता है। यह 'न' निषेधार्थक है।

947 - 'न लोपो नञः' - 6/3/73
यह विधिसूत्र है। यदि 'न' का उत्तरपद यानि सुबन्त के साथ समास होता है तो इस सूत्र से 'न' का लोप हो जाता है
यथा - अब्राह्मणः - लौ० वि० - न ब्राह्मणः, अ० वि० - न + ब्राह्मण + सु
'नञ्' सूत्रानुसार 'न' को उत्तरपदवर्ती सुबन्त के ब्राह्मन के साथ समास हुआ, प्राति० संज्ञा, विभक्ति लोप, उपसर्जन संज्ञा; पूर्वनिपात, पुनः प्राति० संज्ञा, 'न लोपो नञः' से 'न' का लोप होकर - अब्राह्मण रूप हुआ एवं स्वादि कार्य होकर अब्राह्मणः रूप सिद्ध हुआ।

748, तस्मान्नुडचि - 6/3/74
यह विधिसूत्र है। सूत्र का अर्थ है नञ् तत्पुरुष समास में जिस न लोप होता है, इस सूत्र से वहाँ पर 'नुट्' का आगम होता है, यदि उत्तरवर्ती पद का आरंभ स्वरवर्ण से होता हो। 'नुट्' में 'उट्' की इत्संज्ञा (लोप) होता है।
यथा - अनश्वः - लौ० वि० - न अश्वः अ० वि०
न + अश्व + सु, इस सूत्र से नुट् का आगम होकर -
अ + न् + अश्व + सु = अनश्वः।
नैकधा - न + एकधा + सु (लौ० वि०), न

949, कुगतिप्रादयः - 2/2/18.
यह विधिसूत्र है। यदि 'कु' आदि गतिसंज्ञक शब्द का समर्थ सुबन्त पद के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुष संज्ञक होता है। यथा - कुपुरुषः, अ० वि० - कु + पुरुष + सु, (लौ० वि०),
कुत्सित पुरुषः
'कुगतिप्रादयः' सूत्रानुसार 'कु' सुबन्त के साथ पुरुष सुबन्त के साथ समास हुआ। 'कृत्त०' से प्राति० संज्ञा, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप, 'सुपो..' से विभक्ति का लोप, 'उपसर्जनं...' उपसर्जन प्रथमा..' से उपसर्जन संज्ञा, पुनः प्रातिपदिक संज्ञा एवं स्वादि कार्य होने पर कुपुरुषः रूप सिद्ध हुआ।

Uma Bala...
Deptt. of Skt.